Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(*https://jetjournal.us/*)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

अपने अस्तित्व के जद्दोजहद में लक्ष्मी त्रिपाठी जी की सामाजिक भूमिका – (लक्ष्मी त्रिपाठी कृत 'मैं हिजडा, मैं लक्ष्मी !' के विशेष संदर्भ में)

प्रा. राजेन्द्र मुरलीधर ब्राहमणे, हिंदी विभाग, वे. खा. भ. सेवा मंडल का कला एवं वाणिज्य महिला महाविद्यालय, विद्यानगरी, देवपूर, धुले (महाराष्ट्र)

शोध बिंदु

प्रस्तुत विषय भारतीय महिलाओं की विभिन्न क्षेत्र में विकास यात्रा इस शीर्षक से संगोष्टी का विषय तय हैं। अत: इस व्यापक विषय को साहित्य कि दृष्टिसे, कई अछूते विषयों को स्पर्श किया जा सकता है। बहुत से विषयों का मन में कोलाहल, कई विषय एक के बाद एक विचार पटल पर आ रहे थे, भारतीय महिलाओं की विभिन्न क्षेत्र में विकासयत्रा से संबंधित सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक क्षेत्र से जुडी महिलाएँ, जैसे डॉ. अनुसुया शर्मा, डॉ. नलिनी जोशी, डॉ. सुधा डिंगरा, तकनीकी क्षेत्र से जुडी डॉ. प्रतिभा ज्योति, डॉ . रश्मि अग्रवाल, डॉ. सोनाली भारव्दाज, साहित्यीक क्षेत्र की कई लेखिकाएँ महादेवी वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान, शिवानी, कृष्णा अग्निहोत्री मैत्रेयी पुष्पा आदि कई नाम सामने थे। परंतु लिक से हटकर, एक ऐसे वंचित सामाजिक समुदाय पर अपना योगदान देनेवाली लेखिका लक्ष्मी त्रिपाठी के सामाजिक पहलुओं पर व्यक्त होना उस विषय से न्याय देने योग्य मैं समझता हू।

विषय प्रवेश

जिस अर्थ से साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है। यह दर्पण समाज का वास्तव, सामने रखता है। लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी यह नाम होठों पर आते ही समाज का एक ऐसा वर्ग सामने आता है जो संभवत समाज में तिरस्कृत माना जाता है। किन्नर समुदाय को विविध नामों से समाज उल्लेखित करता हैं, हिजडा, छक्का, थर्ड जेंडर, ट्रांसजेंडर आदी। लक्ष्मी त्रिपाठी के माध्यम से किन्नर समुदाय के मानव, मानवाधिकार, सामाजिक प्रतिष्ठा को प्रतिस्थापीत करना यह उद्देश है। हाशिये का समाज किन्नर समुदाय पर विमर्श हो रहे हैं, उन पर लिखा जा रहा है..... जैसे नीरजा माधव का उपन्यास 'यमदीप' (२००२), महेन्द्र भीष्म का उपन्यास का 'किन्नर कथा', चित्रा मुद्गल 'पोस्ट बॉक्स.... नम्बर २०३ नालासोपारा, राहुल सांकृत्यायन का 'किन्नर देश और हिमाचल', हिंदी साहित्य में किन्नर जीवन को लेकर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी का "मैं हिजडा, मैं लक्ष्मी' आदी। इस आत्मकथा के माध्यम से किन्नर वर्ग के न्यायिक हक्क अधिकारों की बात रखना, समाज में उनका स्थान निर्धारित करना है।

लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी यह नाम कौन नहीं जानता? इस नाम के पीछे का संघर्ष, समाज से उपेक्षा लेकीन अपने सामाजिक दायित्व को पहचानकर, अपने जैसे कई लोगों के लिए कुछ कर दिखाने का जज्बा लेकर लक्ष्मी त्रिपाठी अपने कार्य के ओर अग्रेसर होते दिखाई देती है। अपनी आत्मकथा "मैं हिजडा, मैं लक्ष्मी के माध्यम से कुछ पहल की है।

परिचय

एक ब्राहमण परिवार में जन्मी लक्ष्मी श्रीमती सुलोचना देवी सिंघानिया स्कूल ठाणे से अपनी स्कुली शिक्षा पूर्ण की। बाद में मीठीबाई कॉलेज ऑफ मुंबई से स्नातकोत्तर उपाधी प्राप्त की।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

उनकी आत्मकथा 'मैं हिजडा.... मैं लक्ष्मी' आरंभ की पंक्तियों से ही स्पष्ट होता है, "ठाणे में मेरा घर है, येऊर की तलहटी के पास घर की खिडकी से येऊर पर्वत को बिलकूल बाँहों में भर सकते है।"[१] यह अकेलापन उसे सलता है। उन्हें यह लगता है कि, जिस देश, समाज में वह रहते है, उनके लिए वहाँ कोई जगह नहीं है। और न उन्हें साथ देनेवाले कोई है।

लक्ष्मी को अपने एबनॉर्मल होने की चिंता सताती हैं, देह का द्वंद्व लक्ष्मी को सोचने पर विवश करता है..... "इस शरीर में ऐसा क्या है जो पुरुषों को मेरी और खींचता है ।"[२] मैं सहज नहीं हूं की प्रचीति लक्ष्मी को झकझोरती है। "लडका बनकर मैंने जन्म लिया और लडकों से ही प्यार कर रहा था। पर अब धीरे-धीरे मुझे लगने लगा था कि, मैं लडका नहीं लडकी हूँ। आखिरकार मैं कौन हू? आखिर ये जिंदगी मुझे कहाँ ले जाएगी? मैं कुछ कर पाऊँगा या नही.....?"[३] अन्य लोगों से अलग होने की विवंचना से त्रस्त लक्ष्मी को परिवार कभी अलग नहीं मानता। इसीलिए लक्ष्मी अपनी पढाई पूर्ण कर पाती है।

समाज के प्रति अपने दायित्व और अपने जैसे कई और तिरस्कृत लोगों के लिए लक्ष्मी कुछ करना चाहतीं है। भरतनाट्यम नृत्य की राह लक्ष्मी अपने लिए चुनती है। नृत्य को अपनी जीने की वजह बनाते है। डान्स बार में भी वह काम करतीं है, परंतु अपने शरीर का सौदा नहीं करती। लक्ष्मी अगर चाहती तो नर्तक बनकर ही जीवन गुजार सकती थी, अपनी गे होना छुपा सकती थे (गे का अर्थ होमोसेक्सुअल) लेकिन उन्होंने ऐसा किया नहीं। इसका कारण था उनके मार्गदर्शक कवि अशोक राव। जिन्होंने लक्ष्मी के भीतर स्वाभिमान की फुंकर भरी थी।

लक्ष्मी को अपने एबनोर्मल होने की अनुभुति के कारण वह गे लोगों के लिए काम करनेवाले कवि अशोक राव से जब इस बारे में पुछतें है तब अशोक राव कहते है, "एबनोर्मल नहीं हो बच्चें, नॉर्मल ही हो। एबनॉर्मल है ये हमारे आस पास की दुनिया... ये हमें समझ नहीं सकती..।"[४] इसी वाक्य से प्रेरित होकर लक्ष्मी ठान लेती हैं कि, अब रुकना नहीं है।

लक्ष्मी त्रिपाठी का जीवन संघर्ष

"भारत के सभी नागरिक समान हैं, ऐसा अपने देश का संविधान कहता है।"[५] प्रस्तुत वाक्य लक्ष्मी त्रिपाठी जी का 'मैं हिजडा..... मैं लक्ष्मी'। आत्मकथा में लक्ष्मी स्वयं ऊर्फ राजु द्वारा उद्धृत हुआ हैं। अत: सभी मनुष्य को समान दर्जा देने के हक्क अधिकारों हेतू लक्ष्मी त्रिपाठी अपने जैसे किन्नर समुदायों के अधिकार हेतु कार्य करती हैं, और इस सबके लिए लक्ष्मी जी को उनके परिवार का सहयोग महत्त्वपूर्ण रहा है।

हिजडा बनने के प्रथम लक्ष्मी लता गुरु और सबीना मौसी के संपर्क में आती है। वे उनके गुरु के समान थे। उन्होंने लक्ष्मी को समाज की वास्तविकता क्या है? वह बताया। यहाँ तक की महाभारत में अर्जुन को भी बृहन्नला का रुप धारण कर रहना पडा था। राजे रजवाडों में, दरबार में रहनेवाले वीर हिजडों से लेकर जनानखाने में रक्षा करनेवाले 'खोजाँ तक..... बहुत कुछ समझ में आने लगा मुझे, और उसमें मैं इस समाज का हिस्सा हुँ, इसका गर्व भी था मुझे।"[६]

लक्ष्मी त्रिपाठी जी की विशेषता यह है वह केवल अपने लिए नहीं सोचती, परिवार और अपने जैसे लोगों के उत्थान के लिए एकसाथ कार्य करती है। लक्ष्मी जी अपने कार्य की शुरुवात एक समाजसेवी संस्था 'दाई वेलफेअर सोसायटी' के अध्यक्ष के रुप में करती है। जिन लोगों को समाज तिरस्कृत मानता है, उनके प्रति लक्ष्मी अधिक संवेदनशिल दिखाई देती है। कामाठीपुरा की सेक्स वर्कर महिलाओं की स्थिति देखकर वे काफी विचलीत होती है। जरुरत से भी अधिक होते, बंद अंधेरे कमरों में सेक्स-वर्कर लडकियाँ कैसे रह पाती होगी - ?

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

यह प्रश्न उनको झकझोर देता है। पुरी समाज व्यवस्था सें उन्हें चीढ आती है। और इस व्यवस्था को बदलने हेतू जो व्यवस्था इस सब के लिए जिम्मेदार हैं उनके विरुध्द अपनी आवाज बुलंद करती है। मुंबई कामाठीपुरा के सेक्स वर्करों की स्थिति को समाज के सामने रखने के लिए वे अलग-अलग सेमिनार संगोष्ठियों, कॉन्फरन्स में बात रखने लगती है । उनके मानवीय अधिकारों की माँग करती है। साथ ही उन्हें यह एहसास भी दिलाती हैं कि, तुम्हें अपनी परिस्थिति खुद बदलनी होगी। लक्ष्मी आगे टोरांटों में एड्स कॉन्फ्रेन्स में भी शामिल होती है, वहाँ के सेक्स वर्करों के मोर्चे में सम्मीलित होकर उनकी स्थितियों को जानकर, अपने देश के इन लोगों को भी अपने मानवीय अधिकार मिले इस प्रकार की स्पष्ट भूमिका रखती है।

लक्ष्मी जी की स्पष्ट भूमिका, उनके निर्णय उनमें और आत्मविश्वास भरती है। उन्होंने यह मान लिया था कि, वे इस जन्म में ऐसें ही नहीं मरेंगी । यहा किसी के दबाव में आकर अपना निर्णय नहीं बदलेंगी। वे स्वयं सोचती है "जब से मुझे समझ आई थी, तब से मुझे पता था की मैं ऐसे ही मरनेवाली नहीं हूँ, कुछ बनके जाउँगी.....मैं दूध में घुलने वाली शक्कर नहीं बनूँगी, दुध को रंगे देनेवाली केसर बनूँगी।"[७]

'दाई वेलफेअर' सोसायटी के बाद लक्ष्मी 'अस्तित्व' नामक संस्था से जुडकर एक नया कदम आगे बढाती हैं। अपने कम्युनिटी के लोगों के साथ अभद्र व्यवहार, यहाँ तक की अस्पताल के डॉक्टर भी हिजडों के इलाज हेतू आनाकानी करते हैं, उन्हें हाथ लगाने से डरते हैं, उनकों लक्ष्मी फटकारती हैं। उनके इस पहल के कारण ही डॉक्टर संवेदना से बात करते दिखाई देते हैं। जहाँ कही हिजडा कम्युनिटी पर अन्याय होता दिखाई देता है, लक्ष्मी अपने साथियों के लिए प्रदर्शन, मोर्चा संभाले अग्रेसर रहती है।

एक घटना का जिक्र यहाँ करना प्रासांगिक होगा। यह घटना विरार की है। विरार में एक किन्नर का बलात्कार होता है। पुलिस फरियाद नहीं सुनते और डॉक्टर है कि, उसे हाथ नहीं लगाते। बिना जाँच के कोई फरियाद दाखिल नहीं हो सकती थी। लक्ष्मी को यह बहुत बुरा लगा वह अपना मोर्चा संभालती है। सारी घटना जानकर खुद विरार के पुलिस थाने में पहूँचती है, पुलिस इस बात पर ठहाका लगा रहीं थी कि, "बलात्कार ! और वह भी हिजडों पर? फिर क्या था, लक्ष्मी ने यह देख पुलीसवालों को बहुत सुनाई, गालियाँ भी दी और आखिरकार पुलिसवालों को केस दर्ज करवाना पडा। और बोरीवली भगवती अस्पताल के डॉक्टरों ने इलाज भी किया।

कुछ एच.आई.व्ही. पॉजिटिव्ह किन्नरों को डॉक्टर हाथ नहीं लगाते थे, कुछ धंदा करनेवाले किन्नरों को पुलिस पकडकर ले जाती और उन पर कोई भी इलजाम लगा देती थी। लक्ष्मी का कथन है इस संदर्भ में, "इस सबके खिलाफ मेरा मन विद्रोह करता था। हर बार गालियाँ देकर, उँची आवाज में बात करके काम नहीं बनता था। कब, कहाँ, कैसा बर्ताव करना चाहिए, किसके साथ कैसी बात करनी चाहिए इसका ख्याल तो रखना ही पडता था। तभी काम होते थे, वरना औंधे घडे पर पानी।"[८]

इस तरह लक्ष्मी अपने समुदाय के लिए उनके सम्मान और हक्क के लिए जी–तोड मेहनत करती हैं। वह उनमें ऐसा आत्मविश्वास भर देना चाहती है कि उनकी गर्दन हमेशा उँची उठी रहे। वह अपने कम्युनिटी के कला–प्रदर्शन हेतू मानसी, सिमरन, याना, पद्मिनी के साथ युरोप जाती है, वहाँ वह अपने देश का प्रतिनिधित्व करती है। युनाइटेड नेशन्स बिल्डिंग में जाने पर वहाँ अपने देश के तिरंगे को देखकर उसे काफी गर्व महसूस होता है। कहाँ से कहाँ आ गयी थी मैं। हिजडा होकर रह रही थी वहाँ खारीगाँव की गोशाला में..... और आज यह न्यूयॉर्क की युनाइटेड नेशन्स जनरल असेम्बली में.. मैं अब सिर्फ लक्ष्मी नहीं थी, 'भारत' के रुप में लोग मुझे देख रहे थे।"[९]

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

लक्ष्मी ने विदेश की सरजमी पर वहाँ के किन्नर, ट्रान्सजेन्डर उनकें आन्दोलन भी थे। थाईलैंड के 'कथारा' लोगों का भी संघर्ष देखा, टोरांरा, कनाडा के ट्रान्सजेंडंर उनकी मान्यता संघर्ष को भी देखा था। किंतू एक बात भारत और विदेश में साम्य थी वह यह थी कि समाज उन्हें झट से नहीं अपनाता परिवार ही जब नहीं अपनाता तो समाज का क्या है.....

अपने कम्युनिटी के लोग उनके हर एक अधिकार के लिए वह व्यवस्था को परिवर्तीत करने का दायित्व निभाती है। प्रसिद्ध टीव्ही शो 'बिग बॉस' कार्यक्रम में भी वह हिजडा समुदाय के एक सदस्य के रुप में शामिल होते है न कि लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी के रुप में। वहाँ उसे सलमान खान और संजय दत्त द्वारा दिया सन्मान बडा अच्छा लगा। उन्होंने उसे इज्जत सें 'लक्ष्मी जी' नाम से संबोधित किया। कुछ सुखद अनुभूति के साथ कटू व्यवहार का अनुभव भी 'बाम्बे जिमखाना' के सीईओ दुबारा उनके व्यवहार से आया। इस व्यवहार के संदर्भ में लक्ष्मी सोचती है, "क्या सच में हम इक्कीसवीं सदी में हैं? सिर्फ मेरी सेक्सुअलिटी अलग हैं, इसीलिए बॉम्बे जिमखाना में मुझे नही होना चाहिए।"[१२]

लक्ष्मी सभी उतार चढावों को लांघती जा रहीं थी, समाज में अपने प्रतिनिधित्व की जगह बनाते हुए। "हिजडों के ब्युटी कांटेस्ट 'इंडियन सुपरक्वीन' जैसे कार्यक्रम उसी नये समाज के आगमन के संकेत है। किन्नरों को एक नया मंच, समाज माध्यम से उपलब्ध हुआ यह बात लक्ष्मी को गदगद कराती है वह सोचती है, "समाज में हमें कोई पुछ रहा है ये भावना ही हिजडो के लिए काफी महत्वपुर्ण थी। यहाँ पे सिर्फ, देख ही नहीं रहे थे बल्कि वे स्वयं ही 'टाक ऑफ द टाऊन' थे। अपनी कम्युनीटी की 'कपैसिटी बिल्डींग' का जो सपना मैंने देखा था, कुछ हद तक वह सच हो रहा था।"[१३]

मंजीले शिखर की तरफ पहूँचतें हुए उन्हें कुछ किंमत भी चुकानी पड रही थी, अपने ही समाज के नियमों का पालन लक्ष्मी द्वारा भंग होने पर उन्हें हिजडा समुदाय को जुर्माना भी देना पडता था, कुछ उनके नियमों का अनुशासन था, जैसे अपनी हकीकत किसी को न बताना, साक्षात्कार न देना, फोटो प्रकाशित न करवाना आदि। लेकीन लक्ष्मी को लीक से हटकर चलना था परिवर्तन तभी तो संभव था। अपने समाज की दिशा भी वह बदलना चाहती है।

लक्ष्मी जी के पहल के कारण कुछ किन्नर बदलते दिखने लगे थे। शासन, प्रशासन द्वारा उनके लिए मेडिकल कैम्येनिंग शुरु हुई। एच.आई.व्ही. उनके लिए घर, और रोजगार की सुविधा उनके संगठन द्वारा अभियान शुरु हुआ। कानुन बनानेवाले नीतियों में उन्हें बनानेवाले तक इनका अभियान पहुँच रहा था। जिसके चलते कई राज्यों में हम परिवर्तन देख रहे है। तामिलनाडू जेसे राज्य में हिजडो को मकान दिये गये, मध्य प्रदेश में लोक प्रतिनिधि नियुक्त हुए। महाराष्ट्र सरकार ने महिला विषयक जातियों में ट्रान्सजेंडर का समावेश किया है। उनके लिए अनेक बातें सुझायी हैं।"[१४]

निष्कर्ष

किन्नरों का जीवन ही एक संघर्ष है। पहले वह अपने भीतर के बदलाव से लढता है, फिर परिवार और समाज से। उसका संघर्ष जारी रहता है। लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी के प्रयासो ने न केवल हिजडो को सन्मान दिलाया उन्हें मुख्य प्रवाह में भी लाया है। लक्ष्मी विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से लैंगीकता से परे मनुष्यता की स्थापना पर जोर देती है। वह एक ऐसे समाज की संरचना चाहते है जिसमें किन्नरों को भी मुख्य स्थान हो, उनका मुख्य समायोजन हो। किसी प्रकार का भेदभाव न हो। अपने अथक प्रयासों और मेहतन के बलबुते पर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी किन्नर अखाडे की सर्वप्रथम आचार्य महामंडलेश्वर बनी है। यह वार्ता मीडिया में कुंभ

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

मेले के चलते काफी चर्चा में रही हैं। गौरतलब हैं कि, लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी अपने कम्युनिटी के हक्क अधिकारों के लिए, सदा सचेत रही है और आगे भी रहेगी।

अंतत: च्युंकी संगोष्टी का विषय भारतीय महिलाओं की विभिन्न क्षेत्र मे विकास यात्रा से संबंधित है, किंतू मैंने अपना प्रपत्र लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी के जीवन संघर्ष के माध्यम से थर्ड जेन्डर (किन्नर) समुदाय के जीवन, मानवाधिकार से तालुक्क रखता है। इसे किन्नर विमर्श समझ सकते है। किंतु लक्ष्मी और उनके जैसे अपने कई समुदाय के लोग अपने को स्त्री के रुप मे रहना ही अधिक पसंद करते है। लक्ष्मी को जब एक सार्वजनिक टी.व्ही. कार्यक्रम 'सच का सामना' शो में पुछ गया की, 'तुम्हे हिजडा बनकर नहीं, पुरुष बनकर जीना है, ऐसी तुम्हारे माँ बाप की आखिरी इच्छा हो तो तुम पुरुष बनकर रहोंगे क्या? तब लक्ष्मी पुरे ईमानदारी से कहती है, पुरुष बनाकर मैं कभी नही जिउंगी।"[१५] प्रबुद्ध पाठक, अतिथि, विद्वतजन इनको तय करना है, इसे किस लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी को आप किस श्रेणी में रखना चाहोगे।

संदर्भ सूची

१. लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी – मैं हिजडा.. मैं लक्ष्मी, पृ. क्र. २५
२. वही पृ. क्र. ३५
३. वही पृ. क्र. ३८
४. वही पृ. क्र. ३०
५. वही शब्दांकन – वैशाली रोडे पृ. क्र. ११३
६. वही पृ. क्र. ५५
७. वही पृ. क्र. १५५
८. वही पृ. क्र. ८१
९. वही पृ. क्र. ९६–९७
१०. वही पृ. क्र. ७६–७७
११. वही पृ. क्र. १११
१२. वही पृ. क्र. २५
१३. वही पृ. क्र. ११७
१४. वही. पृ क्र. १४८–१४७
१५. वही पृ. क्र. ११०

आभार :- लैंगिकता से परे मनुष्यता की खोज, डॉ. अमित कुमार द्वारा लिखित शोधालेख. 'अपनी माटी' सम्पादक, माणिक एवं जितेंद्र यादव, इनके ... से शनी, सितम्बर ३०, २०२३ के अनुसार जर्नल का अवलोकन, google.com से....

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved